

श्रीश्रीविजयः

मलदवस्य जूखलुजय

यनाय रवर्ग सिद्धि कल्यान कामार्थ स्वस्तिम्बाला ॥ १

८ ॥ धनदशायान ॥ श्रीश्रीकिलिपुविदसः यस्मै का

यगिमहाविहारा वासिन सखाना आय आना ग्या ६

कामार्थ स्वस्तिम्बाला ॥ १० ॥ धनकामादुनि ॥ ॥ नजावु

ASHA ARCHIVES

3781.

कथ्या किं विद्वाद् दयाय, कायन वाचा मनसा ह वायि, यच्छाद
नियस ह सान कश्चा, तथान दृष्ट गुरु (न न ग वः) ॥ ०० दयनिगव
वसं यवत्त, नृगन सगन ०० हा ह स्वस्ति ॥ ११ ॥ धेन सिद्धि
मा रुनि ॥ वजा वाया मदाय ह, अमृक नाम व जिन्ना, अ
रु व नु ल्या न, सिद्धि व सुधनो यूध ॥ यायू वनि, सदा सा

रवीः प्राद्वि सिद्धि च कामनाथं स्वस्ति स्म ॥ १२ ॥ दान यति या
न ॥ दान यति जमानस्य, अमृक नाम रदकस्य, शर्या या यगु
सहितस्य, ये सा सा कनी रवी व रु लवा किन, स वा य कामना
थं, द वगा वागुवः वजा वा ह, मा य व व दाल सि न वा सुरव
वृद्धिः जी वा ग्य लि य ल्म शन, य या नि मदी सै य ल्म य
न्यन ल्म लय द ॥ न सर्व यति वा वस्य, निदा य दी य ज्ञा

ब्रूतायुष्यदन्ति स्ववर्णकं जीवयिर्गन्ता । न कदापि
महादेवि ब्रूता किं निकायका ॥ हाविमिष्ठा ४ सव
स्यनि लक्ष्मि सिद्धं ध्यात्रिसूत्रा ॥ जजमानस्य मम सर्वस
व्याध्यः कल्याणकामार्थं सर्वदयाय ४ स्वमिस्त्रा हाः
॥ ७ ॥ ब्रूता ममादि सकं वदवयान ॥ ॥ ग्रावूद ४

धर्मः स्यादिन रगदीन ४ साक मूनि चगार्गवाधि
सयादिन । कामेना सर्वक विना, ग्राहय रूगुपक
गु ॥ नहुमिह चार्थसिगाथा दग द्वीव यगुसिगा
दवाति नागना । न सर्वदवला काय, सुहिकु
ल कामनार्थ स्वमिस्त्रा हा ॥ ७ ॥ ॥ नयैव रवने

याग ॥ ॥ नयालधर्मनिरुमा, मश्याधनसायिगा
ः कायुवगगाः वाद्यालोकना (धनयायिगा ॥ वहीनिस
ब्रह्माका नाः दीद्यायुवागना जन ॥ धन्यादिधनस
वृद्धि, रुवकुमर्गिलसदाकाथः वर्षकुमयाश्च ॥ रुया
कस्यवतिसदि, निरुत्यागमहासाह, सुसु कुरुवकु

कुर्व ॥ वदुषिययदागथा वृक्षाः सर्वत्राकाः सुवृक्षि
सा रुवकुधर्मसायिन ॥ मासुकश्चिदुवावावादूकुश्च
वचक ॥ उविडादूरु (गदीना, मदमानाशिगविद ॥
सर्वसत्त्वाः समावावायविष्टद्वः प्रिमलुला ॥ जजमा
नस्य, ममसर्वसत्त्वानी ॥ ॐ दसाहनिगट्का २ स्वसिस्वा

हा॥ १॥ ॐ ह्रीं श्रीं नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥
उं ह्रीं दुः सुमोः वरुणा श्वः कृष्णादिदशदिग्गजः । एवम
वसन्ति दशैश्वः सर्वविधिरुचयुदाः नूनं किनापुया
गानाः वक्रिद्रावैद्यः ॥ १॥ दशः । आदित्यादिगुरुगण
नाजिकानि न कृणानि चः न न कृणानि चः हाकिः निव्या

रु
धिरुचसंयुदाः उत्पद्यमाना महाशयगः । नूनं सुसुखा
दयः । जजमानस्य मम सर्वसत्त्वा श्वः सर्वविधिरुचयुस
मनः गुरुदायमर्थः ॥ १॥ सानि स्वसि कागर्थः न व
गुरुयः स्वसि स्वाहा ॥ ६ ॥ धनराजायागः ॥ ॥
सर्वेषां देवगानां हि । स्वगानां च हि न यिष्मः ।

समयमत्वं समयमिति॥ संखलंखनदाय॥ ॥ उं वृद्धवृद्धं॥ वृद्धलाघिः
मानं॥ ॥ उं श्रीमययुववसत्कावायार्थयनीवृद्धादा॥ श्रीमनुः॥ ॥
उं श्रीमययुववसत्कावायार्थयनीवृद्धादा॥ याद्यंमनः॥ ॥ उं श्रीमनः
युववसत्कावायार्थयनीवृद्धादा॥ याद्यंमनः॥ ॥ उं वृद्धवृद्धं
श्रीमगन्धर्वलक्ष्मणाय॥ ॥ उं वृद्धवृद्धं॥ ॥ उं वृद्धवृद्धं॥

ॐ ह्रीं ॥ यंत्रगणनदाय ॥ ॥ ॐ सर्वगणगणकायवि (गा धन स्वाहा ॥ क
लगा क्रियकनदाय ॥ ॥ गणययन्यागः ॥ ॐ वेधानलाय स्वाहा ॥ ॐ अग्निदव
गाय स्वाहा ॥ ॐ दिवाकालाय स्वाहा ॥ ॐ वक्रि दवगाय स्वाहा ॥ ॐ अनलाकाय
स्वाहा ॥ पूजाशुभि ॥ वृं ऊ सं वी ऊ निर्या मं वेधवर्णमदा दारं । वेधान वं मः
हं वन्द्य सर्वसंयतिदायकं ॥ ॥ गणयलशा हं का वं यत्र मंदव हं का वं सिद्धि

राउन ॥ हं का वं रुवकुन्य हं का वायं रुनमाशुन ॥ ॥ गणाद्यन (गा धन शा
उं श्री स्वाहा ॥ २ ॥ ऊ ऊ मानन का (गा क ॥ ॐ सर्वयाय दहनवदाय सर्वयाय द
ह स्वाहा ॥ ॥ हयराउनम दहनम (गा ध ॥ ॐ सर्ववी दि वी स्वाहा ॥ ॥ जागन
गता इ मि मुख वं का वं लय व रुत यमाली शुक्रवदं विरायः जान्वर्यकयः
ल वक्रि मखाय क्रिय दि (गा दृता इ दि दयाम् ॥ ॥ ॐ अग्नि य स्वाहा ॥ ३

(गा धन)

धृम ३॥ ॥ उं अक्राय स्वाहा ॥ अक्रमि ॥ उं वडा (गा) माय स्वाहा ॥ यलावमि ॥
उं वडां गावाय स्वाहा ॥ खदिवा ॥ उं वडा वृद्धाय स्वाहा ॥ अया मागौ ॥ उं वडा कृ
लाय स्वाहा ॥ उवमि ॥ उं वडा यहाय स्वाहा ॥ इं वीव ॥ उं वडा गनिष्ठाय स्वा
हा ॥ गनीक ॥ उं वडा धिक्काय स्वाहा ॥ वलंगन ॥ उं वडा लगाय स्वाहा ॥ यि
लाक ॥ उं वडा मदीयाय स्वाहा ॥ ववग ॥ उं मधून स्वाहा ॥ मधूनमि ॥ उं सर्व या
॥ उं उं श्व काय स्वाहा ॥ अश्वयस्य ॥

ययगमनाय स्वाहा ॥ वेकं क ॥ उं वडा सरुकावाय स्वाहा ॥ अंयमि ॥ उं वडा क
दवाय स्वाहा ॥ कनववमि ॥ उं वडा रिवातिकाय स्वाहा ॥ रिलानिक ॥ उं वडा
मदनाय स्वाहा ॥ मदक ॥ उं मिश्रादग समिध ॥ ॥ गगाकगः श्रीः
आदिहानयः ॥ ॥ उं अयमिदग वडाय स्वाहा ॥ कग ॥ उं वडा यय स्वा
हा ॥ इवो क ॥ उं सर्वयाय दहन वडाय सर्वयाय दहः स्वाहा ॥ हाम ॥

ॐ वज्रयस्य स्वाहा ॥ आरुत ॥ ॐ वज्रवमाय स्वाहा ॥ गच्छ ॥ ॐ वज्रघमाय
स्वाहा ॥ माथच्छ ॥ ॐ वज्रवीज्याय स्वाहा ॥ स्वानवा ॥ ॐ वज्रवीज्या रुवाय स्वाहा ॥ य
वा ॥ ॐ वज्रमहावलाय स्वाहा ॥ मास ॥ ॐ वज्रवाजाय स्वाहा ॥ गाय ॥ ॐ सर्वार्थः
सिद्धस्वाहा ॥ नयका ॥ ॐ सर्वक्रणयक्रणाय स्वाहा ॥ युका ॥ ॐ सर्वसंयदस्वा
हा ॥ दक्षिणा ॥ ॐ वज्रपीथनमाय स्वाहा ॥ ययंयु ॥ ॐ आदर्शनरुलाय स्वाहा

यावक ॥ ॥ रुमाग्नि गाऊनयाय ॥ ॥ ॐ सर्वथाय विधिमात्रानरुमिं कवः
हृदय स्वाहा ॥ ३ ॥ ॐ दानयन ऊजमानस्य ऊज्यमस्वानो ऊजमानस्य गाः
कुरुत संयाय कामार्थं कलगाच्चनय ह्यलं रुनिमित्तार्थं ॐ स्वस्ति वः कवर्गावद्वः
स्वस्ति देवाः सदाका स्वस्ति सर्वोति रुमादि सर्वोकारं दिगं रुवः वद्वयं नरा
वन देवमानां मननव गाथा (॥) समस्ति ॥ यन सर्वो (॥) दसमद्यगाः स्वस्ति वाः

द्वियदाशुनु स्वस्तिवानुवदुयय ॥ स्वस्तिवावजगांमार्ग स्वस्ति यथागमयव
स्वस्तिवायोस्वस्तिदिवाः स्वस्तिमध्यदिनस्तिग सर्वस्वस्तिवाकानु मात्रेयांयाः
यमागमग ॥ सर्वसत्तासर्वयालाः सर्वरुगाधकवलाः सर्ववेसस्तिनसंशु सः
वसन्तु निवामयाः सर्वरुद्रानियस्यन्तु माकश्चित्थायमागमग । यानिरुगानिः
समागगानिस्तिगानिरुमावर्तमानवीक कर्वन्तुमेरी सगमं यजामस्तिवाव

वायोवववन्तु धर्मो ॥ न्यमाधस्तिकंकलिः वृगयहूंगमंरुव ॥ नविनयत्तः
वीकाष्टः कृष्णमाधसस्तिगः संघवाजादिनाजान्यः यहुमन्तुनिनायकाव
कव २ स्थाह ॥ ॥ उंसवाहसुनवदुयजगनश्रः ॥ ॥ धनश्चानयायशा ॥
मनुकलितानिमिध यंकावजं यदमावय ॥ मद् यदिवंजानिमिधुल्ल वृकावा रुः
वं यीमवर्तमकमयं वदुहूजं वामकमधुवधवे सथाववयाकमालाधवं यीः